MORPHOLOGY OF INDIAN CITIES: ANCIENT, MEDIEVAL AND MODERN PLANNED CITIES OF INDIA WITH SPECIAL STUDIES OF JAIPUR AND CHANDIGARH CITIES

‘Morphology’अंग्रेजी भाषा का शब्द है| इसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा के दो मूल शब्दों से मिलकर हुई है| ‘Morphe’ अर्थात Form- रूप का आकार, दूसरा ‘Logos’- विवरण देना (Discourse)|

Morphe + Logos = ‘आकारों या स्वरूपों के विषय में बात करता है|’

आकारिकी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ‘जीव विज्ञान’(Biology) में किया गया था| हैंडरसन: “यह पौधों व जंतुओं के रूप तथा संरचना का विज्ञान है|”

> भूगोल में इस शब्द का अभिप्राय प्रारंभ में पृथ्वी के धरातल का रूप या मानवीय बस्तियों के अध्ययन से लगाया गया |

> डडलेस्टांप (Dadle stamp) - “यह रूप व संरचना का विज्ञान है तथा उस विकास से संबंधित है जो रूप(Form) पर प्रभाव डालता है|”

> भूगोल में आकारिकी (Morphology in Geography) -

नगर पृथ्वी पर मानव निर्मित अधिवास है| इसका भीतरी भूगोल बहुत ही दिलचस्प होता है, क्योंकि आकार बड़ा होता है इसलिए ये अपना अलग ही भीतरी भूगोल रखते हैं| यदि किसी बड़े नगर को देखें तो हमें कुछ बातें देखने को मिलेंगी- एक तो कहीं पर रिहायशी इमारतों की अधिकता देखने को मिलेगी तो कहीं पर दुकानें ही दुकानें और कहीं पर कारखाने ही कारखाने का जमघट मिलेगा| इस प्रकार हमें नगर की भूमि का अलग-अलग ढंग से उपयोग होता है|

भारतीय नगरों की आकारिकी के प्रारंभिक अध्ययन विदेशी विद्वानों द्वारा दिए गए विचारों पर आधारित है|

जॉन बुश (John Brush), ओ.एच.के.स्पेट (O.H.K.Spate) तथा ए.ई.स्मेल्स(A.E.Smailes) ने भारतीय नगरों की आकारिकी का अध्ययन करते हुए बताया था कि नगरों का प्रारंभिक विकास केंद्रोंमुखी शक्ति का परिणाम है|

नगर किसी आकर्षण केंद्र के चारों ओर फैलकर अपनी आकारिकी का निर्माण इस प्रकार कर पाए, जिस प्रकार मधुमक्खी अपने छत्ते का विस्तार करती है|

प्राचीन भारत के नियोजित नगरों में हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो के अलावा वैदिक कालीन नगरों जैसे- कन्नौज, मथुरा, जनकपुरी, हस्तिनापुर, वैशाली, पाटलिपुत्र, सांची, कांचीपुरम आदि का नाम आता है|

मध्यकाल में आगरा, फतेहपुर,सीकरी ,श्रीनगर,शाहजहांबाद

(पुरानी दिल्ली - walled city), जयपुर आदि नियोजित नगरों का विकास हुआ|

जमशेदपुर, चंडीगढ़, नई दिल्ली, बोकारो, भुवनेश्वर, गांधीनगर, ईटानगर, बेंगलुरु आदि आधुनिक काल के नियोजित नगर हैं|

यहां पर मकानों का अनियमित आकार, ऊंचाई की दृष्टि से विविधता, गलियां टेढ़ी-मेढ़ी, सकरी व पतली होती है| ब्रिटिश शासन काल में इन नगरों के बाहरी छोर पर नगरीय कार्यों का विस्तार करते हुए सिविल लाइन, सरकारी कार्यालय, सरकारी अधिकारियों के निवास, सैनिक छावनियां, रेलवे कॉलोनी, गिरजाघर, पुलिस लाइन, न्यायालय आदि स्थापित किए गए| इनमें रहने के लिए बड़े-बड़े आवासों का निर्माण किया गया| सड़कें चौड़ी व सीधी बनाई गई|

स्वतंत्रता के बाद नगर के यह बाहरी छोर और पुराने भाग के साथ समाहित हो गए हैं|

वर्तमान में यह दोनों भाग मिलकर नगर की आकारिकी का बोध कराते हैं| नगर के बाहरी छो, औद्योगिक एवं रिहायशी बस्तियों के प्रसार ने नगरीय आकारिकी को विस्तृत स्वरूप प्रदान किया है,जिसका समुचित ज्ञान कुछ प्रमुख भारतीय नगरों की आकारिकी का अध्ययन करके प्राप्त किया जा सकता है|

> भारत में स्वतंत्रता के पश्चात नगरों ने अपने आकार की दृष्टि से भारी परिवर्तन अंकित किए हैं| इन परिवर्तनों पर नगरों की जनसंख्या में प्राकृतिक वृद्धि व नगरों में जनसंख्या का ग्रामीण क्षेत्रों से भारी संख्या में आकर बसना है| इसने नगरीय वृद्धि(Urban growth) को बढ़ावा दिया है| इस वृद्धि को नगरीय रूप एवं विकास प्रक्रिया द्वारा पहचाना जा सकता है|

नगरीय वृद्धि वृहद एवं अस्पष्ट संकल्पना है | इसको अनेक प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है - विस्तार अथवा सघनता, बिखराव अथवा समूहन, लगातार अथवा मेंढक कूद अनुरूप, स्वभाविक अथवा स्वयं संगठित, नियोजित अथवा जैविक |

(Urban growth is a board and vague concept that can be sub-divided into various types- Sprawlling or compact, dispersed or clustered, continuous or leapfrog, spontaneous or self organizing, planned or organic. -Rupesh Kumar)

इसमें (आकारिकी में) नगर की भौतिक वृद्धि, जनसंख्या वृद्धि, आर्थिक वृद्धि एवं पर्यावरण परिवर्तन आदि को शामिल किया जाता है| यह नगर के भूमि उपयोग प्रारूप, वास्तविक तौर पर उसमें समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को शामिल किया जाता है|

जयपुर नगर की आकारिकी
(Morphology in Jaipur city)

यह राजस्थान का राजधानी नगर है | यह अंतरराष्ट्रीय महत्व का पर्यटन नगर (Tourist centre) है | इसको गुलाबी नगर (Pink city) का नाम दिया गया है | 2011 की जनगणना के अनुसार इस महानगर की जनसंख्या 30.7 लाख तक पहुंच गई है | यह मध्यकाल का नियोजित नगर है | 18 नवंबर, 1727 को महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा बसाया गया | औद्योगिकरण, प्रशासकीय केंद्र तथा ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का भारी संख्या में आगमन ने जयपुर को राजस्थान का सबसे सघन महानगर बना दिया है | इन घटनाओं का यहां के (जयपुर नगर के) भूमि उपयोग, नगरीय विस्तार व पर्यावरण पर काफी प्रभाव पड़ा है|

प्रारंभ में यह नगर चहारदीवारी (चारदीवारी) के भीतर 6 वर्ग किमी. पर विस्तृत था|समय के साथ नगर ने अपनी सीमाओं में तीव्र वृद्धि की है| और इसका क्षेत्रफल बढ़कर 1941 में 7.79 वर्ग किमी., 1971 में 206.06 वर्ग किमी., 2001 में 476.7 वर्ग किमी. 2011 में 760 वर्ग किमी. तक पहुंच गया है | गत चार दशकों में किस नगर की जनसंख्या में 5 गुना वृद्धि हो गई है | सांगानेर, आमेर इसके उपनगर है | यह सड़क व रेल मार्गों का जंक्शन है | यहां से दिल्ली, अलवर, भरतपुर, अजमेर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, उदयपुर, सवाई माधोपुर, कोटा, झालावाड़ आदि स्थानों को सड़क – रेल - मार्ग जाते हैं | वर्तमान में यह बड़ी लाइन द्वारा आगरा, दिल्ली, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, उदयपुर, अहमदाबाद, जामनगर, ओखा, मुंबई, चेन्नई, कोयंबटूर, सिकंदराबाद, भुवनेश्वर आदि से सीधा जुड़ गया है | यहां राज्य का प्रमुख अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है |

बसाव स्थान (Site) - यह नगर अरावली पहाड़ियों के नीचे रेतीले समतल मैदान में स्थित है | ये पहाड़ियां इसके उत्तरी और पूर्वी भाग में फैली हुई है जिस पर महाराजा ने सुदर्शनगढ़ नाम का एक सुंदर किला बनवाया था | आजकल इस किले का नाम नाहरगढ़ किला है | वास्तव में इस नगर की स्थापना से पूर्व जयपुर राज्य की राजधानी आमेर इस पहाड़ी पर स्थित थी जो की सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान था | यहां से समतल भूमि तक पहुंचने के लिए काफी दूर तक दुर्गम पहाड़ी स्थानों को पार करना पड़ता था | अतः यहां से 11 किमी. दूर दक्षिण पश्चिम की तरफ ऐसा स्थान चुना गया जो सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था |

इस नगर के दक्षिण में विशाल समतल भूखंड फैला हुआ है जिसमें शहर की भावी विकास की काफी गुंजाइश है और परिवहन के साधनों को फैलाने की सुविधा है| वर्तमान नगर आमेर से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है| जयपुर की जलवायु स्वास्थ्यवर्धक और शुष्क है| यहां पर न अधिक ठंड पड़ती है और न अधिक गर्मी रहती है|

बसाव स्थिति (Situation) - यह समुद्र तल से 450 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है | जहां से दिल्ली 305 किमी., आगरा 240 किमी. तथा मुंबई 1125 किमी. की दूरी पर स्थित है | यह इन नगरों से सड़क, रेल तथा वायु मार्गों से जुड़ा हुआ है | जहां से चारों ओर को सड़क व रेल मार्ग जाते हैं |

ऐतिहासिक विकास एवं नियोजन (Historical Growth and Planning) –

जयपुर राजस्थान के वैभव का प्रतीक है| यह वास्तुकला एवं सौंदर्य का संगम है| यह भारतीय व आधुनिक संस्कृति के समन्वय की तस्वीर है|

(The city of Jaipur boasts of a harmonious blend of traditional and Modern culture.- Sweta Khandelwal)

जयपुर मध्यकाल के अंतिम वर्षों का महत्वपूर्ण नियोजित नगर है| इसकी स्थापना कछवाहा महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने 1727 ने की थी| उन्हीं के नाम पर इस नगर का नाम रखा गया था|(जयपुर अर्थात जीत का नगर) वे इस नगर के संस्थापक ही नहीं, स्वयं एक वैज्ञानिक, गणित एवं ज्योतिष के ज्ञाता और साहित्य,इतिहास, कला के मर्मज्ञ तथा इन सभी में रुचि रखने वाले थे| उनके दरबार में विद्याधर भट्टाचार्य नामक एक बंगाली इंजीनियर रहता था जो महाराजा को वैज्ञानिक कार्यों में सलाह दिया करता था| महाराजा ने जयपुर की योजना बनाने का कार्य इस वैज्ञानिक को सौंपा था|

जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है कि इस राजा को नगर नियोजन का बड़ा शौक था, इसलिए उसने यूरोप के बहुत से नगरों के नक्शे (plan) मंगवाए और फिर अपने ढंग का प्लान बनवाया| सुप्रसिद्ध शिल्पशास्त्री हावेल ने जयपुर की सुनियोजित योजना की भूरी- भूरी प्रशंसा की और बताया कि इस नगर की स्थापना एक ऐसी वैज्ञानिक योजना के आधार पर हुई थी जिसको नगर निर्माण की हिंदू परंपराओं और नगर नियोजन के प्राचीन ग्रंथों के निर्देशन पर तैयार करवाया गया था|

> यह नगर इतना सुंदर है कि आज भी जब विज्ञान और शिल्प कला अपने उत्कर्ष पर पहुंच गए हैं| वास्तुकला का ऐसा सुंदर नमूना पूरे भारत में कहीं नहीं दिखाई देता है| जयपुर नगर का गुलाबी स्थापत्य (Pink Sculpture) अपनी अलौकिक आभा से दर्शकों के मन को मुग्ध कर देता है| इसलिए इसको भारत का गुलाबी नगर अथवा भारत का पेरिस कहते हैं|

(‘Jaipur with its memorable past history is well known as the ‘Pink City of India’ it is famous for plannet lay-out parks and Palaces’ -Indrapal)

जयपुर नगर का विन्यास (Lay out plan of Jaipur city) –

यह नगर आयताकार विन्यास रखता है| इसे पहाड़ियों के घेरे को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त स्थान पर बसाया गया है| यह पूर्व - पश्चिम दिशा में लंबा व उत्तर- दक्षिण दिशा में चौड़ा है| इसका क्षेत्रफल 8 वर्ग किमी. है,जिसको 6 मीटर ऊंची व 3 मीटर चौड़ी दीवार घेरे हुए हैं| पूर्व - पश्चिम दिशा में जाने वाली 3.5 km लंबी सड़क 34 मीटर चौड़ी है| यह सड़क चार स्थानों पर समकोण बनाती हुई सड़कों से मिलती है| सड़कों के चौराहे पर चौकोर खुले स्थान मिलते हैं, जिन्हें चौपड़ कहते हैं|

इस प्रकार नगर को आयताकार (Rectangular) खंडों में बांट दिया गया है | इस नगर की चारदीवारी के पूर्वी गेट को सूरजपोल कहा जाता है, क्योंकि यह सूर्यादय के दर्शन कराता है| पश्चिमी गेट चांदपोल, उत्तरी गेट ध्रुवपोल तथा दक्षिण की ओर शिवपोल व कृष्णपोल नाम के दो गेट है| छठे गेट का नाम घाटगेट है जो नगर के दक्षिणी - पूर्वी कोने पर स्थित है, जहां से पहाड़ियों में से होता हुआ मार्ग आगरा को जाता है|

कृष्णपोल व शिवपोल के बीच एक नया गेट बना हुआ है जहां से चंद्रमहल, विधानसभा भवन और गोविंद जी मंदिर को मार्ग जाता है| नगर के दक्षिण में रामनिवास बाग फैला हुआ है| यहां पर एक संग्रहालय (Museum) है| नगर के उत्तरी भाग के मध्य में राजा का महल स्थित है| महल के चारों ओर परकोटा बना हुआ है| जिसको 7 दरवाजों से पार किया जा सकता है| इस महल का मुख्य गेट चौड़ा बाजार पर खुलता है| यहां पर मुख्य सड़कों के दोनों ओर एक डिजाइन की दुकानें बनी हुई है और दुकानों के ऊपर भव्य भवन व मंदिर बने हुए हैं| ये सब गुलाबी रंग के पत्थर से बने हैं|यहां पर ज्योतिष वैद्यशाला (जंतर - मंतर जिसे 2013 में विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित किया गया) बनी हुई है | हवा महल कला का सुंदर नमूना प्रस्तुत करता है|

नगरीय विस्तार एवं विकास (Urban sprawl and Development) –

यह नगर उत्तरी व पूर्वी क्षेत्र में पहाड़ी भाग होने के कारण दक्षिणी समतल क्षेत्र की ओर फैल सका है या फिर पश्चिम की ओर अमानीशाह नाले के पार समतल स्थान पर फैलना शुरू हुआ |1881 में नगर अपनी चहारदीवारी के बाहर दक्षिण तथा पश्चिम की ओर फैलने लगा |अजमेरी गेट के बाहर एक अत्यंत सुंदर बस्ती बन गई | सर मिर्जा इस्माइल के इस राज्य का प्रधानमंत्री बनने से इस नगर ने तीव्र गति से प्रगति की |1952 में पांच नगर नियोजन योजनाएं रिहायशी विकास के लिए शुरू की गई थी| इन योजनाओं में 1. आदर्श नगर 2. मोतीडूंगरी और टोंक रोड़ के बीच 3. अशोकनगर 4. न्यू कॉलोनी 5. बनी पार्क के रूप में थी | अशोक नगर जयपुर की सबसे अच्छी कॉलोनी है| आदर्श नगर का विकास विस्थापितों को बसाने के लिए किया गया| सिविल लाइंस का विकास भी इसी समय हुआ |

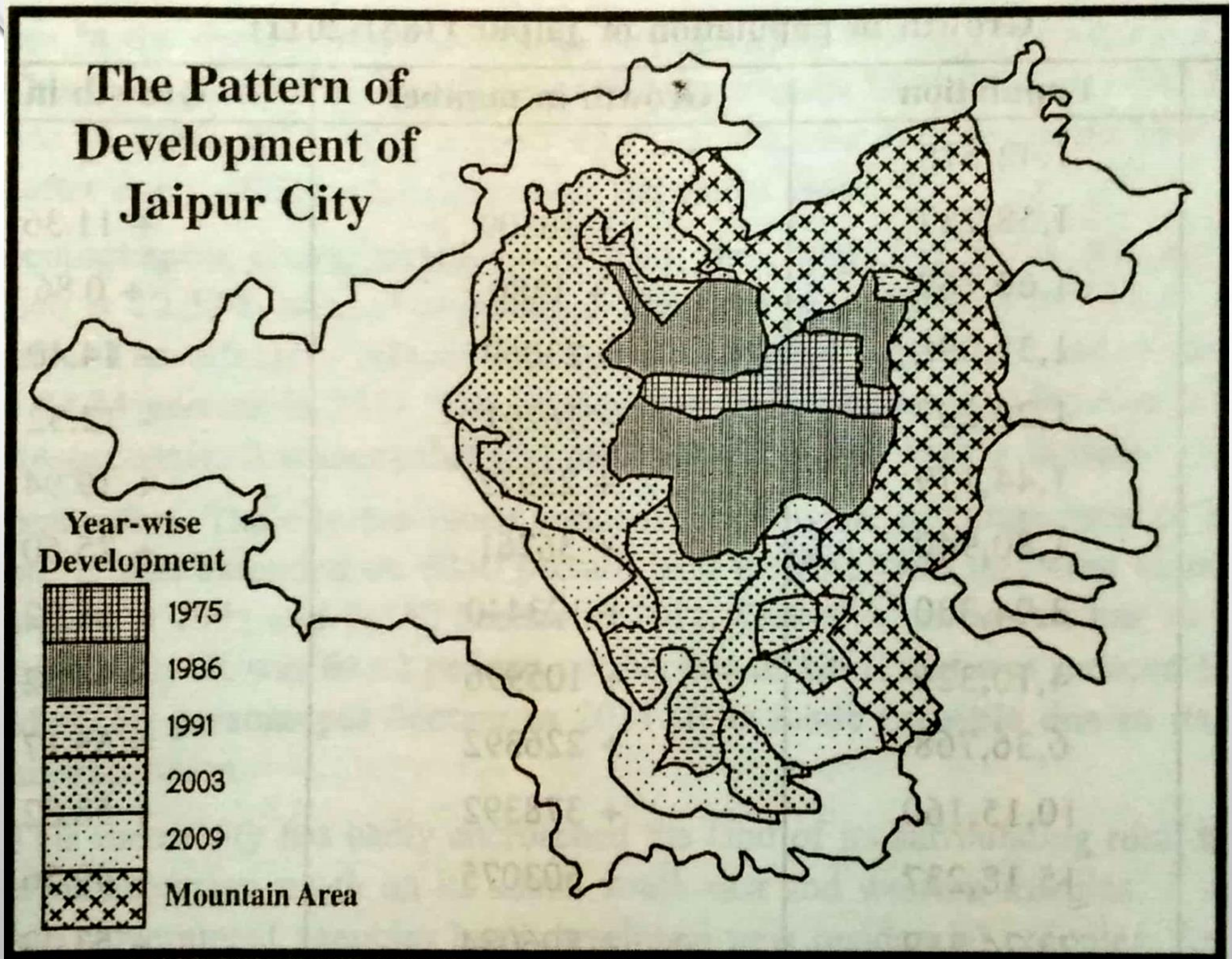

Fig. 19.1 The Pattern of Development of Jaipur City

1948 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन जिस स्थान पर हुआ वहां पर बापू नगर तथा गांधीनगर कॉलोनियां विकसित की गई | राजस्थान राज्य के बनने पर जयपुर को उसकी राजधानी बनने का अवसर मिला| इससे नगर ने और तेजी से अपना विस्तार किया |1970 में राज्य सरकार के हाउसिंग बोर्ड ने जवाहर नगर, मालवीय नगर, मानसरोवर कॉलोनियों का विकास किया| सीकर, टोंक मार्ग के सहारे औद्योगिक इकाईयों का स्थापन किया गया, जहां ग्रामीण अप्रवासियों ने अपने को बसाकर नगर को सघन बस्ती का रूप दिया | वर्तमान समय में यह हवाई अड्डे को जाने वाले 11 किलोमीटर लंबे मार्ग के दोनों ओर फैल गया है नगर का कुल क्षेत्रफल 1100 वर्ग किमी. से भी अधिक हो गया है, जो कि चहारदीवारी से घीरे पुराने जयपुर के क्षेत्रफल से कई गुना अधिक है|

जनसंख्या वृद्धि, घनत्व एवं अन्य विशेषताएं (Demographic Features)-

जयपुर राजस्थान का सबसे बड़ा व देश का दसवां नगर है | नगर के विस्तार के साथ-साथ यहां की जनसंख्या भी तेजी से बढ़ रही है| यह वृद्धि नगर के आर्थिक विकास व नगरीकरण का प्रतीक है|

Growth in population of Jaipur (1881-2011)

Year	Population	Growth in number	Growth in %
1881	1,42,578	–	–
1891	1,58,787	+ 16209	+ 11.36
1901	1,60,167	+ 1380	+ 0.86
1911	1,37,098	- 23069	- 14.40
1921	1,20,207	- 16291	- 12.32
1931	1,44,179	+ 23972	+ 19.94
1941	1,80,940	+ 36761	+ 25.50
1951	3,04,380	+ 123440	+ 68.22
1961	4,10,326	+ 105996	+ 34.82
1971	6,36,768	+ 226392	+ 55.17
1981	10,15,160	+ 378392	+ 58.82
1991	15,18,237	+ 503075	+ 49.56
2001	23,24,319	+ 806084	+ 53.09
2011	30,73,350	+749031	+32.23

The decade 1991

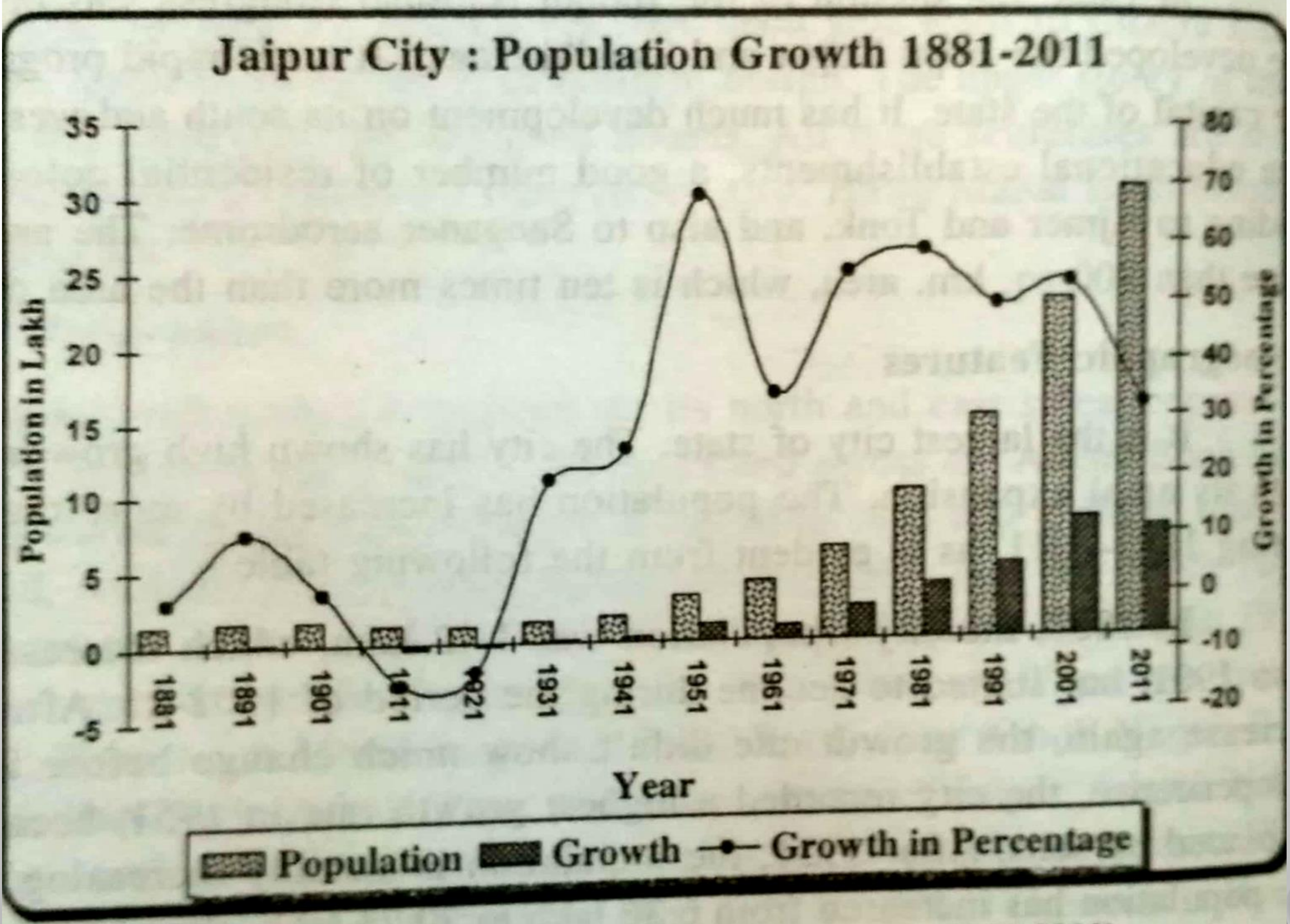

Jaipur City : Population Growth 1881-2011
Population in Lakh
Growth in Percentage
Year
35
30
25
20
15
10
5
0
-5
80
70
60
50
40
30
20
10
0
-10
-20
1881
1891
1901
1911
1921
1931
1941
1951
1961
1971
1981
1991
2001
2011
Population
Growth
Growth in Percentage

नगरीय विकास का प्रारूप (Urban Growth Pattern) –

प्रथम अवस्था(First Stage) - 1727-1767 के बीच महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने चहारदीवारी नगर की नींव रखी| इसके उत्तर व पूर्व में पहाड़िया थी| यह आयताकार विन्यास (Rectangular Lay-out) के रूप में था| सड़कें सीधे व समकोण पर मिलती थी| चंद्रमहल केंद्रीय भाग में था|

द्वितीय अवस्था (Second Stage) - 1767-1850 की अवधि में चारदीवारी के बाहर सटे हुए भू-भागों में नगर ने फैलना शुरू कर दिया| जोहरी बाजार, किशनपोल बाजार, गणगौरी बाजार विकसित हो गए |

तृतीय अवस्था (Third Stage) - 1850 -1930 के वर्षों में नगर में चारदीवारी के बाहर रिहायशी क्षेत्रों का विस्तार होना प्रारंभ हुआ |1868 में रेलमार्ग की स्थापना ने नगर को प्रगति की ओर अग्रसर किया|

चतुर्थ अवस्था (Fourth Stage) -1930 -1970 की अवधि में नगर ने जनसंख्या की भारी वृद्धि को अंकित किया |रामनिवास बाग के दक्षिण में फतेह टिबा, अशोक नगर, जालूपुरा, बनी पार्क में रिहायशी कॉलोनियों, सार्वजनिक संस्थानों तथा अन्य सुविधाओं का विस्तार हुआ| 1947 में राजस्थान विश्वविद्यालय की स्थापना ने नगर के दक्षिण भाग में फैलने के लिए प्रेरित किया|

पंचम अवस्था (Fifth Stage) - 1970 के बाद से आज तक नगर ने यूं तो सभी दिशाओं में विस्तार किया है, लेकिन दक्षिण - पश्चिम व उत्तर - पश्चिम में विस्तार अधिक हुआ है| उत्तरी व पूर्वी भाग में पहाड़ी भू-भाग एक अवरोधक के रूप में रहा है|

भूमि उपयोग एवं आकारिकी (Land use and Morphology)

जयपुर महानगर की आकारिकी एवं भूमि उपयोग पर जिन विद्वानों के विचारों के आधार पर यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया है उनमें इंद्रपाल गुप्ता का लेख 'Jaipur- A Stuty in Land Use'श्वेता खंडेलवाल 'Urban Sprawl of Jaipur Metropolitan' तथा रूपेश कुमार गुप्ता का लेख,जो 'Institute of Town Planners,India की पत्रिका में जुलाई- सितंबर 2011 के अंक में 'Change Detection Techniques for Monitoring Spatial Urban Growth of Jaipur City' नाम से प्रकाशित हुआ है, आदि शामिल है|

Land use of Jaipur Metropolitan city (1961-2011)

Land use	Area in hectare			Percentage of total		
	1961	1991	2011	1961	1981	2011
Residential	2310	17200	34150	35.0	51.3	44.8
Commercial	260	1600	5102	4.3	4.8	6.7
Industrial	590	4460	4600	9.5	13.3	6.0
Administrative/Public/Semi-public	2160	3020	9518	35.0	9.0	12.5
Park / Playground	240	1000	8550	4.0	3.0	11.3
Transport and Communication	610	6020	11710	9.2	18.0	15.4
Open Areas	180	200	2520	3.0	0.6	3.3
Total	**6350**	**33500**	**76150**	**100.0**	**100.0**	**100.0**

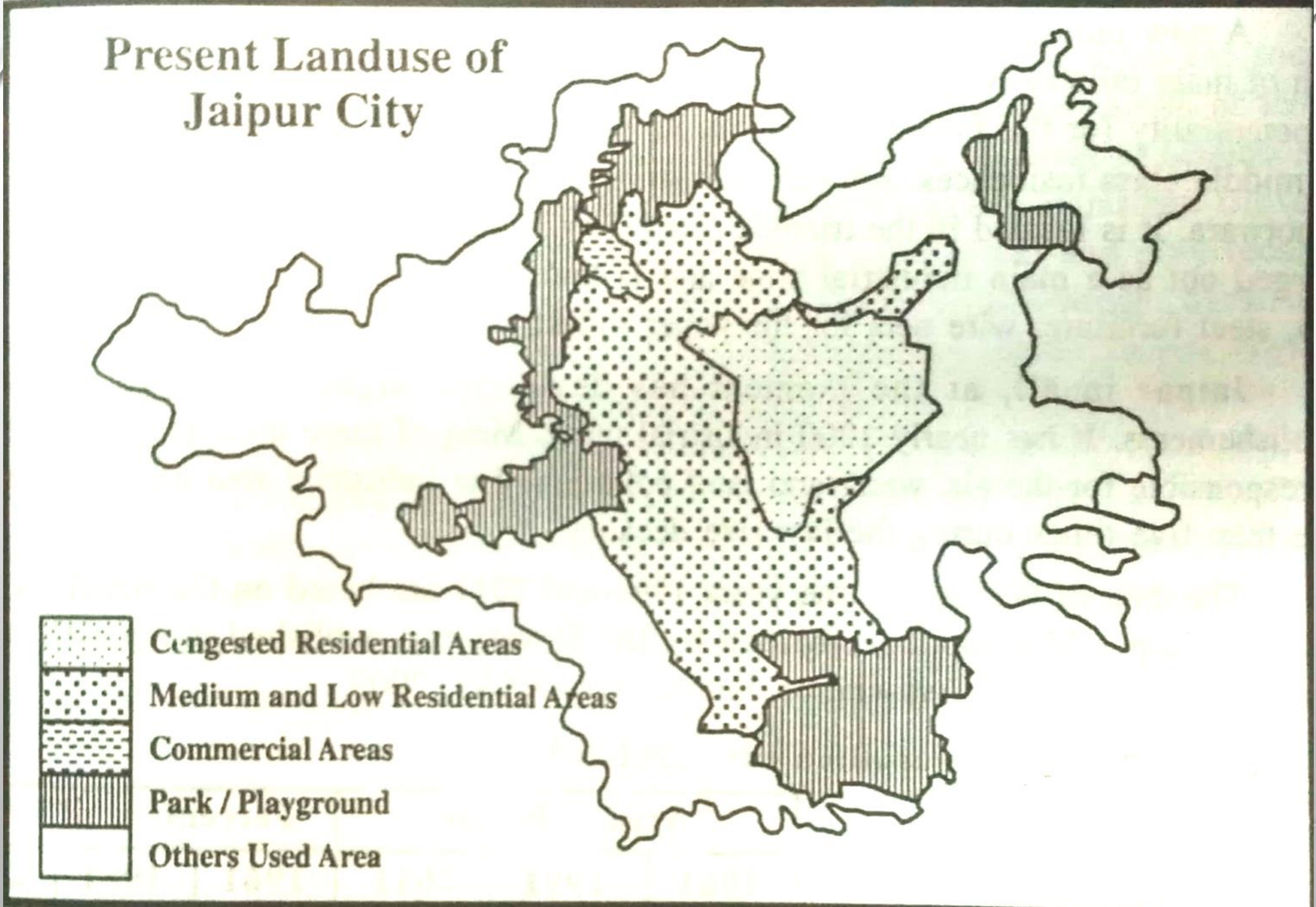
Present Landuse of
Jaipur City
Congested Residential Areas
Medium and Low Residential Areas
Commercial Areas
Park / Playground
Others Used Area

1. रिहायशी क्षेत्र (Residential Areas)

2. व्यापारिक क्षेत्र (Commercial Areas)
3. औद्योगिक क्षेत्र (Industrial Areas)
4. प्रशासकीय क्षेत्र (Administrative Areas)
5. शैक्षिक क्षेत्र (Educational Areas)
6. अन्य क्षेत्र (Other Areas)

भारत का सुनियोजित नगर : चंडीगढ़
(Planned City of India: Chandigarh City)

पंजाब व हरियाणा की सीमा पर शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में अंबाला से 45 किमी. उत्तर में चंडीगढ़ नगर स्थित है| यह अंबाला- कालका रेल मार्ग के पश्चिम में स्थित है| सतलज मैदान के अति उपजाऊ प्रदेश के मध्य में तथा कश्मीर व हिमाचल जाने वाले व्यापार मार्गों के समीप स्थित होने के कारण इसका विशेष महत्व है। यह दिल्ली, लुधियाना, पटियाला व शिमला आदि से सीधे सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है| यह एक केंद्रशासित प्रदेश है और पंजाब व हरियाणा राज्यों की राजधानी है|

बसाव स्थान (Site) :- इसका बसाव स्थान बड़ा ही उत्तम है| यह समतल भूमि पर है तथा उत्तर से दक्षिण दिशा में एक अंश का ढ़ाल रखता है| समुंद्र तल से ऊंचाई 304 से 365 मी. के बीच पाई जाती है| उत्तर में शिवालिक पहाड़ियांहै तथा इसके दोनों ओर दो नदियां बहती है| चंडीगढ़ प्राकृतिक दृश्यों की सुंदरता रखने वाला नगर है| उत्तर में एक बड़ी झील है जो उसकी सुंदरता में चार चांद लगा देती है| इस झील के चारों ओर बहुत ही अच्छा पार्क बनाया गया है जो नगरवासियों को उनके खाली समय में मनोरंजन प्रदान करता है|

यहां पर गर्मियों में अधिकतम तापमान 44 डिग्री तथा सर्दियों में न्यूनतम 1.7 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है| यह नगर अति सुंदर, आकर्षक लगता है| सड़कें ग्रिड प्रकार की है| इन सड़कों से पेड़ के आकार (Tree like) की सड़कें भी जुड़ी है|

नगर का प्लान (Plan of Urban) :- इस नगर का प्लान 1950 में अल्बर्ट मेयर द्वारा तैयार किया गया था| बाद में प्रसिद्ध वस्तु - शिल्पकार लीकोरी वर्जियर ने इसको संशोधित करके 1952 में प्रस्तुत किया| इस नगर का निर्माण 1953 में शुरू किया गया 7 अक्टूबर को राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा इसका शिलान्यास किया गया| इसको इस सिद्धांत के आधार पर बनाया गया है कि नगर एक जैविक- प्राणी है|

(Lecobusier , the creater of Chandigarh, described the city, as a living organism)

'यह नवीन व्यक्तित्व वाला नगर है| इसका ढांचा बिल्कुल नए प्रकार का है| यह वर्तमान समय का सुंदर नगर है| ऐसी विशेषता रखने पर किसी भी नगर को गर्व हो सकता है|"

("It is a youth and personality of which any town can rightly be proud of Being entirely new it is pride piece of the present age.")

चंडीगढ़ : भूमि उपयोग

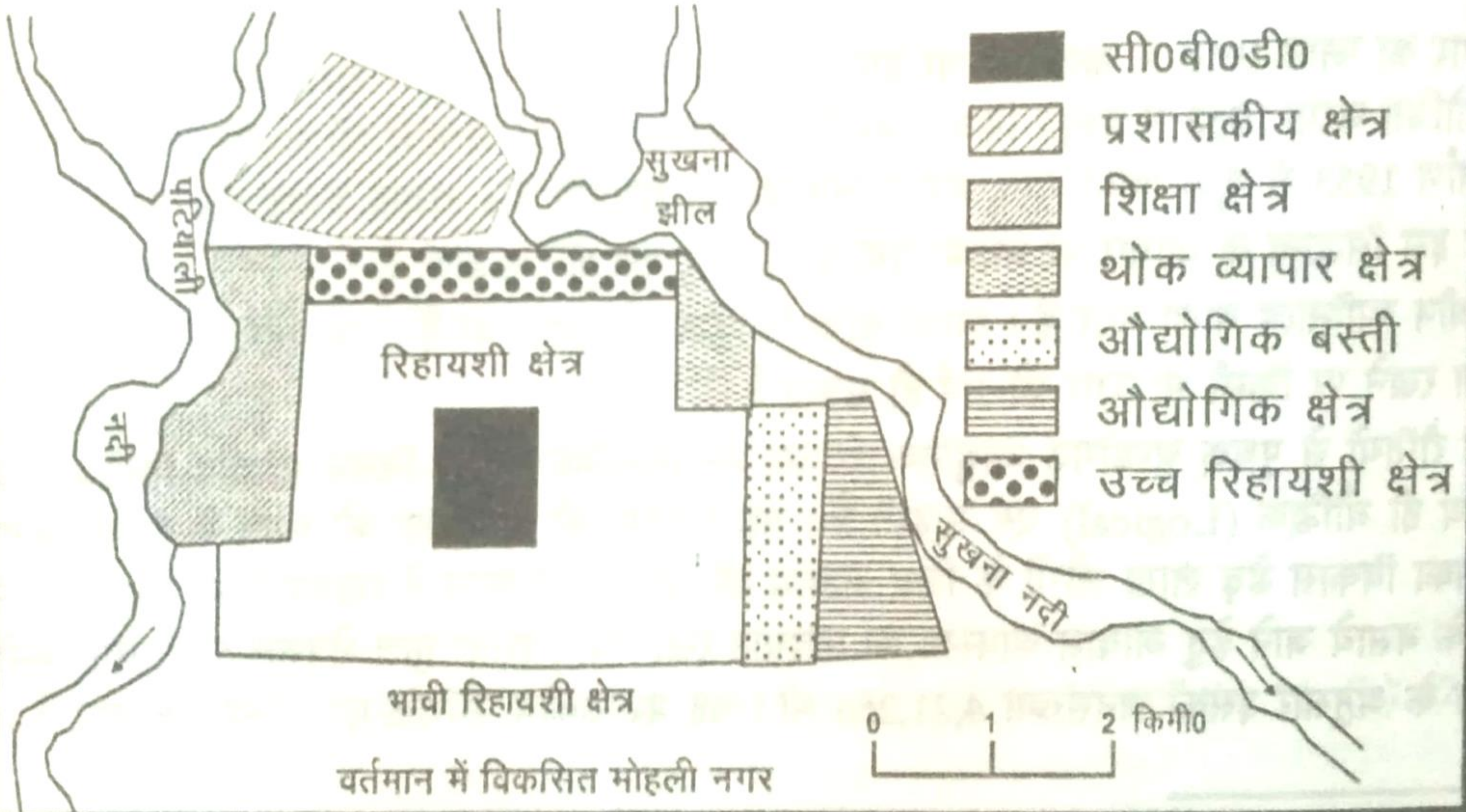
सी0बी0डी0
प्रशासकीय क्षेत्र
शिक्षा क्षेत्र
थोक व्यापार क्षेत्र
औद्योगिक बस्ती
औद्योगिक क्षेत्र
उच्च रिहायशी क्षेत्र
सुखना झील
पटियाली
नदी
रिहायशी क्षेत्र
सुखना नदी
भावी रिहायशी क्षेत्र
0
1
2 किमी0
वर्तमान में विकसित मोहली नगर

प्राचीन रीतियों से पृथक चंडीगढ़ आधुनिक ढंग का एक नियोजित नगर है जिसमें भारतीय नियोजको द्वारा किए गए प्रयास निश्चय ही बौद्धिक (Logical) एवं साहसी हैं| यह पांच लाख की जनसंख्या को ध्यान में रखकर बनाया गया था | प्रारंभ में उसका विकास 1.50 लाख लोगों के लिए आवास की सुविधा को ध्यान में रखकर किया गया और भविष्य में 3.5 लाख लोगों के बसाये जाने हेतु आवास व्यवस्था का प्रावधान रखा गया| इसका कुल क्षेत्रफल 57.6 वर्ग किमी. है| 1981 की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या 4,21,256 थी |

यह प्रशासकीय, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक नगर है| नगर को 46 आत्म-निर्भर जिलों में बांटा गया है जो कि सेक्टर(Sector) कहलाते हैं| एक सेक्टर 1200 x 800 मीटर के आकार का है| प्रत्येक सेक्टर अपना व्यापारिक केंद्र (Shoping Centre), सामुदायिक केंद्र (Community Centre), स्वास्थ्य केंद्र (Health Centre) और एक हायर सेकेंडरी स्कूल रखता है| सेक्टर प्रणाली को अपनाने का प्रमुख उद्देश्य नगर वासियों को अधिक से अधिक सुविधा एवं आराम प्रदान करना है| रिहायशी क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्र से अलग कर दिया गया है ताकि मिलो (उद्योग धंधे/ कारखानों) के धुए से नगर वासियों को असुविधा न हो |

लीकोर वर्जियर ने यहां सात प्रकार की सड़कें बनाई है जो कि एक बिल्कुल नई विचारधारा है|

‘Chandigarh has become a land-mark in the domain of town planning architecture architectre and Engineering’

यह पंजाब की सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करता है| यह स्वतंत्र भारत की जागृत हुई गतिशील आध्यात्मिकता (Dynamim spirit) की संक्षिप्त अभिव्यक्ति है|

यहां पर नगर नियोजन के इन सिद्धांतों को अपनाया गया है –

1. सुनियोजित सामीप्य इकाई क्षेत्र
2. सड़कों का सुंदर जाल
3. पंजाब-हरियाणा राज्यों के मिलन- स्थल पर केंद्रीय स्थिति
4. विभिन्न स्थानों को जाने वाले मार्गों की समीपता
5. आवासीय क्षेत्रों के निकट ही खुले स्थानों की सुलभता
6. प्रत्येक सेक्टर के व्यापारिक क्षेत्रों का परस्पर जुड़ा होना
7. नगरवासियों को सभी प्रकार की नगरीय सुविधाओं की उपलब्धता
8. उन सब वास्तु- कलाओं का सुव्यवस्थित सम्मिश्रण, जो परस्पर मिलकर इसकी रूपरेखा को अति सुंदर बनाते हैं|

एक राजधानी नगर को जो आवश्यकता पड़ती है वे सभी यहां पर उपलब्ध की गई है| जैसे- उच्च न्यायालय, सचिवालय (सात मंजिला) आवासीय मकान आदि| इन सभी इमारतों की सबसे मुख्य विशेषता है कि इनमें 'Sun Breakera' की सुविधा है | ईटों व कंकरीट की दीवार से एक विशेष कोण पर रखकर जाली का निर्माण किया गया है, जो गर्मी में सूर्य किरणों की गर्मी को सोखती है व जाड़ों में मकानों को गर्म रखने में मदद देती है| इस नगर के बारे में कहा जा सकता है कि- प्राकृतिक दृश्यों की सुंदरता, सेक्टर प्रणाली का प्रयोग, विभिन्न प्रकार की सड़कों का जाल, नगर के एक भाग से दूसरे भाग तक खुले स्थानों तथा हरि पेटी (Green belt), वास्तु शिल्प का सुंदर व सादा नमूना, हवादार व आरामदायक इमारतें अन्य उपयोगी सेवाओं जैसे जल प्रदाय, स्वस्थस्वच्छता,प्रकाश आदि की समुचित उपलब्धता|

> चंडीगढ़ नगर का संगठन (plan) आयताकार प्रतिरूप में है जो अन्य नगरों से भिन्न है। नगर के वास्तविक स्वरूप का निर्धारण (Determination) दोनों ओर बहने वाली पटियाली रॉव तथा सुखना रॉव नदियों ने किया है| नगर का संगठन स्वरूप भौगोलिक तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया है| नगर नियोजन (Master plan) चंडीगढ़ को 30 खंडों में बांटता है| इन तीस खंडों में अधिकांश आयताकार है| इनमें से 24 खंड, रिहायशी उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं| यहां आवासीय खंडों का वर्गीकरण आय व व्यवसाय वर्गों के आधार पर किया गया है| उत्तर- पूर्व में स्थित सेक्टर दो और पांच में उच्च सरकारी अधिकारी रहते हैं| सेक्टर 15 में प्रमुखतः वास्तुशिल्पी, डॉक्टर व अध्यापकों के निवास स्थान है| सबसे घने बसे सेक्टर 20, 22 व 27 है| जिनमें निम्न आय- वर्ग के लोग अधिक संख्या में रहते हैं|

सेक्टर 17 पूर्ण रूप से व्यापारिक सेक्टर है जो नगर का सीबीडी है| यह नगर के केंद्र का कार्य करता है| यहां बस टर्मिनल है| यहां अनेक व्यवसायिक, वास्तु कला संग्रहालय, टाउन हॉल, सिनेमा, रेस्टोरेंट होटल, क्लब, पुस्तकालय आदि सार्वजनिक इमारतें भी मिलती है|

सेक्टर 14 में पंजाब विश्वविद्यालय शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है| सेक्टर 12 में इंजीनियरिंग कॉलेज स्थित है| औद्योगिक क्षेत्र सुखना राव नदी के पश्चिमी किनारे पर सेक्टर 28 व 29 के पूर्व में स्थित है| यह औद्योगिक क्षेत्र रेल मार्ग की सुविधा रखता है| औद्योगिक आवास के लिए इसके समीपवर्ती सेक्टर सुरक्षित रखे गए हैं| सेक्टर 28 के उत्तर में साग- सब्जी, फल व अनाज का थोक बाजार स्थल विकसित किया गया है|

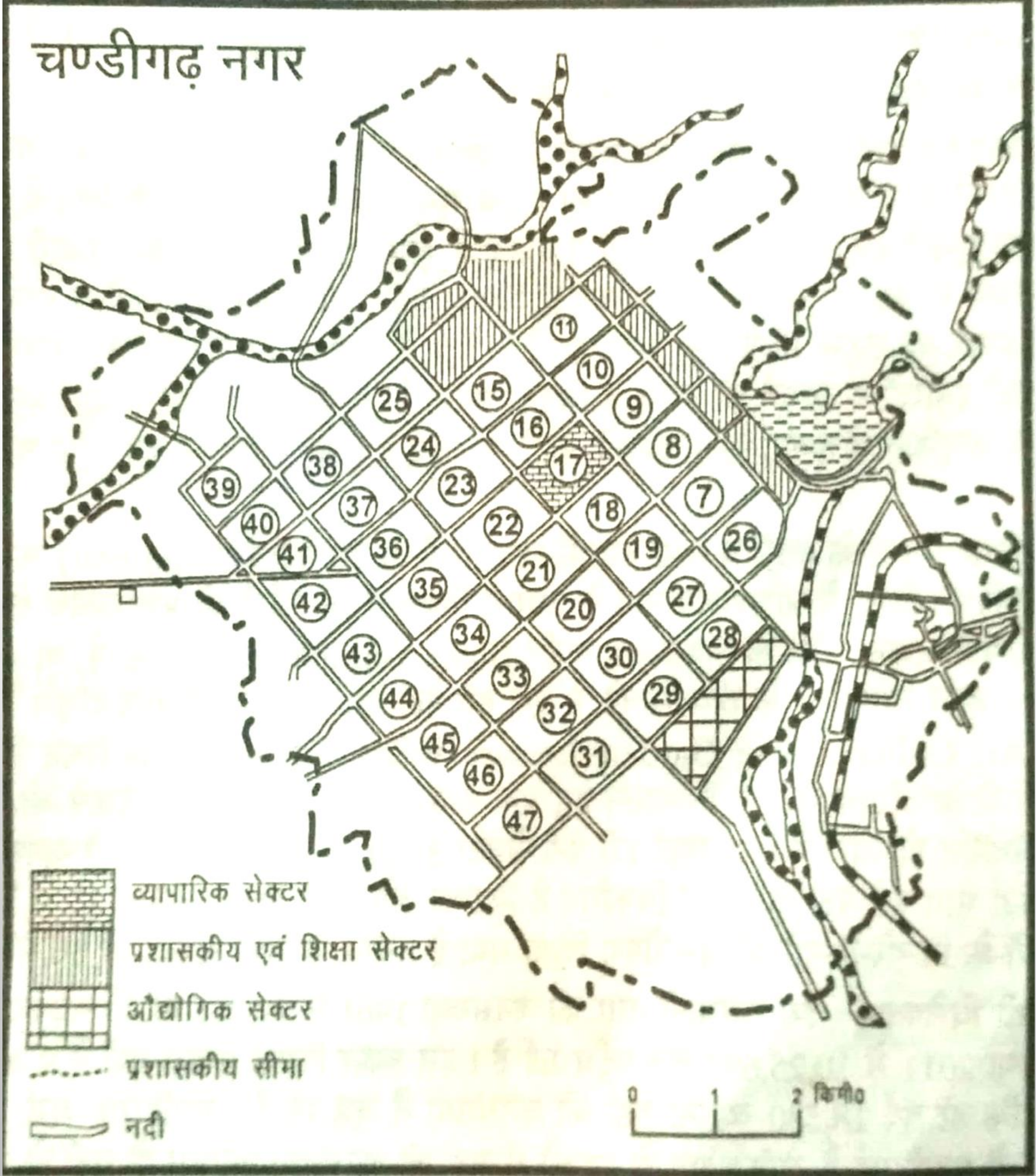
चण्डीगढ़ नगर
11
10
15
9
25
16
8
24
17
38
23
7
39
37
18
22
26
40
36
19
41
21
35
27
42
20
34
28
43
30
33
44
29
32
45
31
46
47
व्यापारिक सेक्टर
प्रशासकीय एवं शिक्षा सेक्टर
औद्योगिक सेक्टर
प्रशासकीय सीमा
नदी
0
1
2 किमी0

प्रशासकीय कार्यों के लिए पृथक सेक्टर नियत किया गया है| यहां पर 7 मंजिलों का आयताकार सचिवालय, चार मंजिलों का उच्च न्यायालय, राजभवन, विधानसभा भवन आदि स्थित है| यह वास्तव में राजधानी कार्यों का संग्रह है| इसके उत्तर- पूर्व में सुखना झील का निर्माण किया गया है| यहां पर विकसित सुंदर पार्क लोगों को मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करता है| सुखना झील के दक्षिण- पूर्व में राजीव गांधी सूचना तकनीक पार्क का विकास किया गया है| इसके उत्तर में पंचकूला में स्थित मनसा देवी कंपलेक्स स्थित है| वर्तमान में दक्षिण भू-भाग पर मोहाली नगर का विकास पंजाब सरकार ने किया है|

चंडीगढ़ की परिवहन प्रणाली में सात प्रकार की सड़कें हैं -

1. तीव्र परिवहन धमनी जो चंडीगढ़ को दिल्ली तथा अन्य नगरों से जोड़ती है|
2. सभी प्रकार के यातायात के लिए है और नगर की मुख्य संरचनात्मक दूरी के साथ गुजरते हुए उसे दो बराबर भागों में बांटती है, और नगर केंद्र को मुख्य सरकारी कार्यालयों से जोड़ती है|
3. सेक्टरों की सीमाओं पर मिलती हैं, जिनका प्रयोग तीव्र गति के वाहनों व नगरीय बस वाहनों द्वारा किया जाता है|
4. धीमी गति वाले वाहनों के लिए
5. सहायक सड़कें
6. रिहायशी इमारतों के सामने की सड़कें हैं जिनका प्रयोग पैदल चलने वाले लोगों द्वारा प्रमुख रूप से होता है|
7. इस प्रकार की सड़कें सामूहिक खेलकूद, घूमने, टहलने आदि के लिए हैं|

हरी पेटी का विकास (Green belt) - नगर के उत्तरी व मध्य भाग में लगातार फैली हरी पेटी (Green belt) का विकास किया गया है| एक हरी पेटी पूर्व -पश्चिम दिशा में सचिवालय मार्ग के उत्तर में विकसित की गई है जो प्रशासकीय क्षेत्रों के लिए मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करती है| यहां सुखना झील के निकट एक गार्डन (Rock Garden) बनाया गया है, जो अपने आप में अनूठा उदाहरण पेश करता है| उच्च न्यायालय के ठीक सामने से एक हरी पेटी नगर के मध्य से उत्तर- दक्षिण दिशा में गुजरती है| यहां पर Museum, Art Gallery, Rose Garden, Leisure Valley, Fitness Trails स्थित है| Fitness Trails सेक्टर 23 में है| यहां से अतिरिक्त जल के निष्कासन हेतु एक नाले (Drain) का विकास देखने को मिलता है, जो आगे एक नदी के रूप में परिवर्तित हो जाता है| मध्यवर्ती हरी पेटी सेक्टर 3,10,16,23,36 व 42 में अपना विस्तार रखती है| सेक्टर 10 का अधिकांश भाग हरी पेटी के रूप में विकसित है जिसका और आगे विस्तार सेक्टर 11 में मिलता है| पटियाली रॉव व सुखना रॉव नदियों के किनारे किनारे भी वृक्षारोपण किया गया है| नगर के सभी सेक्टरों में हरी पेटी मौजूद है|

जनसंख्या संबंधी विशेषताएं -
राजधानी नगर की जनसंख्या 1961 में 99262 थी जो बढ़कर 1991 में 5.74 लाख, 2001 में 8.08 लाख तथा 2011 में 10.25 लाख तक पहुंच गई है| इस प्रकार 50 वर्षों में 9.26 लाख लोग यहां पर बढ़ गए हैं|

जनसंख्या वृद्धि (Population Growth) - इस महानगर में जनसंख्या की अतिशय वृद्धि 1961-71 के दशक में अंकित की गई| 1991- 2001 के दशक में यद्यपि गत दशक की तुलना में वृद्धि दर में अल्प वृद्धि हुई, लेकिन 2001- 2011 के दशक में यह वृद्धि कम होकर 26.86% रह गई है|

लिंगानुपात (Sex Ratio) - यहां 1961 में लिंगानुपात 639 था जो बढ़कर 1991 में 813 व 2001 में थोड़ा घटकर 792 तक हो गया | 2011 में लिंगानुपात 821 है| 0 से 6 वर्ष आयु वर्ग का लिंगानुपात 867 है|

वर्ष	जनसंख्या	अन्तर	प्रतिशत वृद्धि	पुरुष-महिला अनुपात
1961	99262	–	–	639
1971	232940	+ 133678	134.67	756
1981	421256	+ 188316	81.52	776
1991	574646	+ 153390	35.90	813
2001	808796	+ 234150	40.75	792
2011	1025682	+ 216886	26.86	821

यहां अनेक परिवार स्थाई रूप से आकर बस गए हैं| प्रारंभ में इन परिवारों के पुरुष ही यहां पर काम की तलाश में आए थे| 1961 में पुरुषों व महिलाओं की संख्या क्रमश: 60553 व 38709 थी, जो बढ़कर 1991 में 3.16 लाख व 2.57 लाख पर पहुंच गई| 2001 में इनकी संख्या क्रमशः 4.51 व 3.57 लाख थी| इस प्रकार पुरुषों की संख्या लगभग 7 गुनी बढ़ी, जबकि महिलाओं की संख्या लगभग 9.23 गुनी बढ़ी| 2011 में पुरुषों व महिलाओं की संख्या बढ़कर क्रमश: 5.63 लाख व 4.62 लाख हो गई| स्पष्ट है कि महिलाओं की संख्या में पुरुषों की तुलना में अनुकूल सुधार हुआ है|

जनसंख्या का वितरण (Distribution of Population) - 2011 की जनगणना के आधार पर चंडीगढ़ को 26 वार्डों में विभाजित किया गया है| सबसे कम जनसंख्या वार्ड 3 में 21,166 तथा सबसे अधिक जनसंख्या वार्ड 23 में 65,187 मिलती है| 20,000 से 30,000 के बीच जनसंख्या रखने वाले वार्डों की संख्या 10 है, जिनमें महानगर की 28.71% जनसंख्या निवास करती है| 30,001 से 40,000 के बीच जनसंख्या 9 वार्डों में मिलती है| इनमें कुल जनसंख्या का 33. 26% भाग निवास करता है| 40,001 से 60,000 के बीच जनसंख्या रखने वाले वार्डों की संख्या 6 है, जहां पर 31.25% जनसंख्या रहती है| लघु आकार के वार्डों में लिंगानुपात अधिक है| बाहरी क्षेत्र, जो औद्योगिक व अन्य कार्यों का जमाव रखते हैं वहां पर यह अनुपात दयनीय दशा में है|

चण्डीगढ़ के वार्डों में जनसंख्या का वितरण 2011

क्रम	वार्ड की जनसंख्या	संख्या	जनसंख्या	पुरुष	महिला	अनुपात	कुल में प्रतिशत
i.	30,000 से कम	10	275881	140448	135433	964	28.71
ii.	30,001 से 40,000	9	319528	172091	147437	857	33.26
iii.	40,001 से 50,000	3	139631	76982	62649	814	14.53
iv.	50,001 से 60,000	3	160560	90227	70333	780	16.72
v.	60,001 से अधिक	1	65187	37553	27634	736	6.78
	योग	26	960787	517301	443486	857	100.00
	बाह्य क्षेत्र	–	64895	45826	19069	416	–

जनघनत्व (Density) - चंडीगढ़ महानगर में जनसंख्या का घनत्व तीव्रता के साथ बढ़ रहा है 2001 में यह घनत्व 7903 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.था जो बढ़कर 2011 में 10023 तक पहुंच गया|

साक्षरता (Literacy) - साक्षरता का प्रतिशत 1991 में 66.05% था, जो बढ़कर 2001 में 72.66 तथा 2011 में 86.56% तक पहुंच गया | पुरुष व महिलाओं में यह अनुपात 1991में 70.03 व 60.93% था, जो बढ़कर 2001 में 76.30 व 68.07 तथा 2011 में 90.65 व 81.55% हो गया| अतः यह कहा जा सकता है कि यहां पर महिलाओं में साक्षरता का अच्छा प्रभाव है|

Thank You

Concept of basic and non-basic functions, Internal functional structure of urban centers

आधारभूत एवं गैर- आधारभूत कार्यों की अवधारणा, शहरी केंद्रों की आंतरिक कार्यात्मक संरचना

(Concept of basic and non-basic functions, Internal functional structure of urban centers)

केंद्रीय स्थान द्वारा किए जाने वाले वह सभी कार्य, जो यह अपने चारों ओर के प्रदेश के लिए करता है, केंद्रीय कार्य (Central functions) कहलाते हैं| केंद्रीय कार्य कई प्रकार के कार्यों का समूह होते हैं तथा इनके कई स्तर व क्रम होते हैं| केंद्रीय कार्यों का पदानुक्रम बस्तियों के पदानुक्रम से पूर्ण रूप से संबंधित होता है| केंद्रीय कार्य प्राय: असर्वगत (Non-ubiquitous) प्रकार के होते हैं|

जेफरसन के अनुसार "शहर अपने आप से बड़े नहीं होते हैं। देशवासी उन्हें ऐसे कार्य करने के लिए सेट करते हैं जिन्हें केंद्रीय स्थानों में किया जाना चाहिए "।

इन कार्यों को दो वर्गों में रखा जा सकता है-

1.आधारभूत कार्य (Basic functions) –

इन कार्यों को नगर के समीपवर्ती प्रदेश से आधार प्राप्त होता है | नगर इन कार्यों द्वारा ही बाहरी क्षेत्रों से धन कमाता है| ऐसे कार्यों में औद्योगिक कार्यों के साथ-साथ व्यापारिक, वित्तीय, प्रशासकीय, मनोरंजन व शिक्षा संबंधी कार्य भी शामिल है| ये कार्य आमदनी के आधार पर दो उप वर्गों में बांटे जा सकते हैं-

(i) इन कार्यों का विस्तार - नगर कुछ ऐसे कार्य करता है जिनका प्रभाव समीपवर्ती क्षेत्र में होने के साथ-साथ दूरवर्ती क्षेत्रों में होता है| इन कार्यों का प्रभाव राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय तक हो सकता है| उदाहरण के लिए ,औद्योगिक माल की बिक्री जैसे कि वाराणसी की रेशमी साड़ियां न केवल इस नगर के समीपवर्ती भागों को भेजी जाती है बल्कि उनका बाजार राष्ट्रीय है| अतः ऐसे कार्य के द्वारा नगर का समीपवर्ती प्रदेश में प्रभाव को नहीं आंका जा सकता है|

(ii) इन कार्यों का आकर्षण - कुछ ऐसे कार्य होते हैं जो केवल नगर के चारों ओर के लोगों को आकर्षित करते हैं| नगर ये कार्य इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों के लिए ही करता है | इन कार्यों द्वारा नगर का प्रभाव क्षेत्र नगर के चारों ओर एक लगातार पेटी के रूप में फैला होता है| यह पेटी नगर से कितनी दूर तक विस्तृत है, यह नगर के कार्यों की प्रकृति तथा उसी कार्य की अन्य समीपवर्ती बस्तियों में उपस्थिति पर निर्भर करता है| नगर के इस प्रभाव क्षेत्र को ही विभिन्न नामों से पुकारते हैं जैसे -अमलैंड , हिंटरलैंड,सिटी- रीजन, अर्बन -फील्ड आदि|

2. स्थानिक कार्य/गैर -आधारित कार्य (Non-basic activities/ functions) - इन कार्यों के द्वारा नगर अपने निवासियों की सेवा करता है| ये कार्य नगर के लोगों के लिए ही आवश्यक होते हैं| इन कार्यों को स्थानीय सेवा (Local Service) का नाम भी दिया जाता है|

अतः यह कहा जा सकता है कि प्रादेशिक कार्य या आधारभूत कार्य ही नगर को आधार प्रदान करते हैं| इन्हीं के द्वारा नगर अपने समीपवर्ती प्रदेश की सेवा कर पाता है जिससे वह चारों ओर से घिरा रहता है| इसी से उसे हम केंद्रीय स्थान कहकर भी पुकारते है| ये कार्य जो नगर के विकास को निर्धारित करते हैं|

शहरी केंद्रों की आंतरिक कार्यात्मक संरचना (Internal functional structure of urban centres) –

नगरीय अधिवासों की अपनी संरचना, पैटर्न और प्रणाली में विशेष सामंजस्य /लगाव होती है। लेकिन यह संपूर्ण शहरी प्रणाली का केवल एक आंशिक हिस्सा है। दूसरा भाग सांस्कृतिक परिदृश्य से संबंधित है जो शहरों की पृष्ठभूमि बनाते हैं और उनके विकास को प्रभावित करते हैं। उनकी आंतरिक विशेषताओं के ज्ञान के बिना, शहरों की प्रकृति की समझ पूरी नहीं हो सकती है। इसके आकार, स्थान और वृद्धि के अलावा, हमें भूमि उपयोग और उनकी व्यवस्था, सोशल नेटवर्किंग, संस्थागत नियंत्रण जैसे ज़ोनिंग (खंडो के) नियमों का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि ये सभी कारक शहरों की संरचना को प्रभावित करते हैं।

किसी शहर की विशेषताएँ विभिन्न कारकों के संयोजन का परिणाम होती हैं जैसे स्थलाकृति, जलवायु, इतिहास, अर्थव्यवस्था, संस्कृति आदि। इन विशेषताओं में भिन्नता होती है, प्रत्येक शहर / शहर अद्वितीय होता है और कुछ विशिष्ट विशेषताएं होती हैं। हालाँकि, ये शहरी विशेषताएँ कभी स्थिर नहीं होती हैं। वे समय और स्थान के अनुसार बदलते हैं।

अर्थव्यवस्था के विकास के साथ, जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण और बेहतर प्रौद्योगिकी जैसे अन्य कारक शहरी बस्तियों पर एक संयुक्त प्रभाव डालते हैं, जो बड़े और अधिक जटिल होते हैं। शहरी भूगोलविदों द्वारा शहरों की आंतरिक संरचना का अध्ययन संरचनात्मक है। शहरी बस्ती की भौगोलिक विविधताएं जैसे- भवन आकार, आकार, ऊंचाई, कार्य और सामाजिक स्थिति में भिन्नता आदि।

नगरीय केंद्रों को कार्य की संरचना के आधार पर मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है -
(1) आंतरिक कार्यात्मक सरचना (Internal functional structure)
(2) बाहरी कार्यात्मक संरचना (external functional structure)

कभी भी दो नगर एक से नहीं होते| हर नगर अपनी अलग विशेषता रखता है| नगरों का वर्गीकरण उनकी विभिन्न विशेषताओं के आधार पर किया जाता है जैसे- बसाव -स्थिति के आधार पर नदी तटीय नगर, समुद्र तटीय नगर या पर्वतपदीय नगर आदि| इसके अलावा कुछ ऐसे परिवर्तनशील तथ्य है जैसे -जनसंख्या का आकार, नगरों में रहने वाली जनसंख्या की जातीय संरचना व कार्य| आकार के विचार से नगरीय बस्तियों के 6 वर्ग है-1. नगरीय पुरवा 2. नगरीय गांव 3. कस्बा 4. नगर 5. महानगर 6 वृहद महानगर |

नगरीय भूगोलवेत्ता के लिए नगरीय कार्यों का विश्लेषण करना बड़ा महत्वपूर्ण है, क्योंकि नगरों की आंतरिक संरचना का सबसे मुख्य तथ्य नगरों का कार्य है| ये कार्य नगरों के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित पाए जाते हैं| नगरों के कार्यों पर नगर की- बसाव -स्थिति का प्रभाव पड़ता है| इसके साथ नगर इन कार्यों द्वारा जिन लोगों की सेवा करता है, उन कार्यों का भी प्रभाव नगर पर पड़ता है| कार्य नगरीय जीवन को चलाने वाली शक्ति है जो उसके विकास व स्वरूप पर विस्तृत प्रभाव डालते हैं| नगर के कार्यों के विश्लेषण द्वारा नगर की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचनाओ तथा व्यवस्थाओं का अवलोकन होता है|

नगरों में रहने वाली जनसंख्या का संबंध नगर के कार्यों से होता है| नगर में जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ कार्यों की संख्या भी बढ़ती है| उसमें अनेक प्रकार के कार्यों का मिश्रण पाया जाता है| कभी-कभी नगरों का आकार उनके कार्यों के बारे में सही तस्वीर प्रस्तुत नहीं कर पाता है| एक छोटे आकार की बस्ती अपनी केंद्रीय सुविधाजनक स्थिति के कारण अधिक कार्य रख सकती है | एक नगर में कई प्रकार के आर्थिक व्यवसाय वाले लोग रहते हैं जैसे कि दिल्ली के कुछ लोग व्यापारिक कार्यों में लगे हैं, कुछ निर्माण उद्योगों, कुछ प्रशासनिक कार्यों, कुछ परिवहन संबंधी कार्यों में लगे हैं, लेकिन फिर भी एक नगर में जो कार्य या व्यवसाय प्रधान होता है उसी के आधार पर उस नगर की मान्यता होती है| अतः दिल्ली देश की राजधानी होने के कारण प्रशासनिक नगर है| कोलकाता में उद्योग ,प्रशासनिक तथा अन्य कार्यों में बहुत से व्यक्ति लगे हुए हैं, लेकिन वहां व्यापारिक कार्यों में लगी जनसंख्या अधिक होने के कारण उसकी मान्यता व्यापारिक नगर के रूप में है| कानपुर में औद्योगिक कार्यों में जनसंख्या अन्य कार्यों से अधिक है| अत:कानपुर एक उद्योग नगर है| इसी प्रकार से हापुड़ में कृषि उत्पादों के व्यापार की प्रधानता होने के कारण उसकी मान्यता व्यापारिक नगर के रूप में है|

नगरीय केंद्रों की आंतरिक कार्यात्मक संरचना से संबंधित सिद्धांत जिन्हें नगरीय आकारिकी के सिद्धांत (Theories of Urban Morphology) या नगरीय भूमि उपयोग संबंधी सिद्धांत (Theories of Urban land-use) भी कहां जाता है| ये सिद्धांत नगर की आंतरिक संरचना (Internal structure) के बारे में भी बताते हैं| यद्यपि प्रत्येक नगर की आंतरिक संरचना अनन्वय (Unique) होती है, उनमें कार्यों के मिश्रित क्षेत्र होते हैं| अमेरिकी नगरों में व्यापारिक, औद्योगिक, व्यवसायिक तथा रिहायशी क्षेत्र अलग-अलग स्थापित होते हुए मिलते हैं|

शहरों की आंतरिक संरचना ने सिद्धांतों के रूप में कई सामान्यीकरणों को जोड़ा है। इन सिद्धांतों ने बड़े पैमाने पर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देश के किसी भी स्थान पर शहरों की जांच करके शहर की संरचना को समझाने का प्रयास किया है। शहरों की आंतरिक संरचना पर विभिन्न सिद्धांत बर्गस के संकेंद्रित क्षेत्र सिद्धांत, होमर होयट के खंड सिद्धांत,, हैरिस और उल्मन के बहु-नाभिक सिद्धांत, आर.ए मुर्डी के सामाजिक क्षेत्र विश्लेषण मॉडल (1969) और विलियम बंज का शोषक मॉडल आदि मुख्य है|

THANK YOU